सूरह — एक कहानी

सूरह अज़-ज़ुख़रुफ़

सोने के ज़ेवर

पूरा सफ़र — इस दुनिया की क़ीमत, तौल कर —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 43 • 89 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इन्ना ज'अल्नाहु क़ुरआनन 'अरबिय्यल्-ल'अल्लकुम त'क़िलून
3. बेशक हमने इसे एक अरबी क़ुरआन बनाया ताकि तुम समझो।

सुब्हानल्-लज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन
13. पाक है वो जिसने इसे हमारे बस में किया, वरना हम इसे क़ाबू में नहीं ला सकते थे।

अ हुम यक़्सिमून रहमत रब्बिक
32. क्या वो तुम्हारे रब की रहमत बाँटते हैं?

व इन कुल्लु ज़ालिक लम्मा मता'उल्-हयातिद्-दुन्या
35. और ये सब कुछ तो बस दुनिया की ज़िंदगी का साज़-ओ-सामान है।

अल्-अख़िल्ला-उ यौम-इज़िम्-ब'अ्ज़ुहुम लि-ब'अ्ज़िन 'अदुव्वुन इल्लल्-मुत्तक़ीन
67. उस दिन गहरे दोस्त एक दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाए मुत्तक़ियों के।

या 'इबादि ला ख़ौफ़ुन 'अलैकुमुल्-यौम व ला अन्तुम तह्ज़नून
68. ऐ मेरे बंदो! आज न तुम पर कोई ख़ौफ़ है न तुम ग़मगीन होगे।

तुम्हारी अपनी ज़ुबान में एक किताब

बेटा, ये सूरह 'हा मीम' और खुली किताब की क़सम से खुलती है, और फिर एक ऐसा बयान जो रुक कर ग़ौर करने लायक़ है: '**इन्ना ज'अल्नाहु क़ुरआनन 'अरबिय्यल्-ल'अल्लकुम त'क़िलून** — बेशक, हमने इसे एक **अरबी** क़ुरआन बनाया, ताकि तुम अपनी **अक़्ल इस्तेमाल** करो।'

बेटा, ज़ुबान के लिए दिया गया मक़सद ग़ौर कीजिए: सिर्फ़ इसलिए नहीं कि तुम उसे ख़ूबसूरती से पढ़ो, बल्कि '**त'क़िलून**' — ताकि तुम **समझो।** अल्लाह ने इसे उसके पहले सुनने वालों की ज़ुबान में भेजा **ठीक इसलिए ताकि कोई ये न कह सके कि पैग़ाम उन से बंद कर दिया गया।**

'व इन्नहू फ़ी उम्मिल्-किताबि लदैना ल-'अलिय्युन हकीम — और बेशक वो, **उम्मुल-किताब** (असल किताब) में हमारे पास, **बुलंद** और हिकमत से

भरपूर है।' बेटा, **उस से पहले कि वो तुम्हारे हाथ पहुँचे, वो पहले ही सब से बुलंद जगह में मोअज़्ज़ज़ था।**

'**अ फ़-नज़्रिबु 'अन्कुमुज़्-ज़िक्र सफ़्हन अन कुन्तुम क़ौमम्-मुस्रिफ़ीन** — तो क्या हम **नसीहत** को **तुम से फेर दें**, तुम्हें नज़र-अंदाज़ करते हुए, इस लिए कि तुम एक **हद से बढ़ने वाली** क़ौम हो?'

बेटा, उस सवाल में **रहमत** महसूस कीजिए। उन्होंने इनकार किया, मज़ाक़ उड़ाया और हद पार की थी — और अल्लाह पूछते हैं: *तो क्या हम इसलिए तुम्हें नसीहत भेजना बंद कर दें?* **छुपा जवाब नहीं है। वो भेजते रहे।** बेटा, **यही तुम्हारा रब है: अभी भी उन लोगों को पुकारता जिन्होंने उसे रुकने की हर वजह दे दी।**

वो दुआ जो तुम बिना सोचे कहते हो

फिर सूरह अल्लाह की नेमतें गिनाती है, और उन में से एक उस चीज़ से ताल्लुक़ रखती है जिसे आप **हर रोज़** इस्तेमाल करते हैं: 'वल्-लज़ी ख़लक़ल्-अज़्वाज कुल्लहा — और वो जिसने **जोड़े** बनाए, सब के सब — व ज'अल लकुम मिनल्-फ़ुल्कि वल्-अन्'आमि मा तर्कबून — और तुम्हारे लिए **कश्तियाँ** और **मवेशी** बनाए जिन पर तुम **सवार** होते हो।'

'लि-तस्तवू 'अला ज़ुहूरिही सुम्म तज़्कुरू नि'मत रब्बिकुम इज़स्तवैतुम 'अलैहि — ताकि तुम उनकी पीठों पर **जम** कर बैठो, फिर जब तुम उस पर जम जाओ तो अपने रब की **नेमत याद** करो — **व तक़ूलू सुब्हानल्-लज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन** — और **कहो: पाक है वो जिसने इसे हमारे बस में किया, और हम इसे क़ाबू में नहीं ला सकते थे** — **व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून** — और बेशक, **हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं।**'

बेटा, **ये सफ़र की दुआ है** जिसे नबी ﷺ अपने ऊँट पर सवार होते वक़्त पढ़ा करते थे — और यही वो दुआ है जो मुसलमान आज **गाड़ी, ट्रेन, हवाई जहाज़** में बैठते वक़्त कहते हैं। **इसे सीखिए, और हर बार कहिए।**

और जुमला देखिए '**व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन**' — हम इसे **कभी ख़ुद क़ाबू में न कर सकते।** बेटा, एक ऊँट के बारे में सोचिए: एक जानवर जो आदमी के वज़न और ताक़त से कई गुना है, जो उसे आसानी से मार सकता है — **और वो एक बच्चे के चढ़ने के लिए बैठ जाता है। किसने उसे इस पर राज़ामंद किया? हम ने नहीं।**

और इसे अपनी ज़िंदगी पर लगाइए: वो इंजन जो आपने डिज़ाइन नहीं किया, वो सड़कें जो आपने नहीं बनाईं, वो ईंधन जो आपने नहीं बनाया, **वो फ़िज़िक्स जो सौ टन के जहाज़ को हवा में थामे रखती है।** 'मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन।'

और ग़ौर कीजिए दुआ कैसे ख़त्म होती है, बेटा — *'सफ़र मुबारक'* से नहीं बल्कि **'अपने रब की तरफ़ हम लौटने वाले हैं'** से। **हर सफ़र आख़िरी सफ़र की एक रिहर्सल है।** इसी लिए सफ़र की दुआ में मौत की याद-दिहानी है: **क्योंकि जो शख़्स इसे कहता है उसे सिखाया जा रहा है कि हर हरकत उसी एक जगह ख़त्म होती है।**

हमने अपने बाप-दादा को एक राह पर पाया

फिर, बेटा, सूरह इंसानी तारीख़ में सच की **सब से आम रुकावट** को बे-नक़ाब करती है — और इसे यूँ करती है कि कोई फ़रार नहीं बचा।

क़ुरैश ने कहा: '**इन्ना वजद्ना आबा-अना 'अला उम्मतिंव्-व इन्ना 'अला आसारिहिम मुक़्तदून** — **हमने अपने बाप-दादा को एक राह पर पाया**, और हम उनके **नक़्श-ए-क़दम** पर **चल रहे** हैं।'

और अल्लाह दिखाते हैं कि ये कोई मक्की दलील नहीं — **ये आलमी है**: 'व कज़ालिक मा अर्सल्ना मिन क़ब्लिक फ़ी क़र्यतिम्-मिन नज़ीरिन इल्ला क़ाल मुत्रफ़ूहा इन्ना वजद्ना आबा-अना 'अला उम्मह — और यूँ, हमने तुम से पहले **किसी बस्ती में कोई डराने वाला न भेजा** मगर उसके **ख़ुश-हाल** लोगों ने कहा: *हमने अपने बाप-दादा को एक राह पर पाया।*'

बेटा, इसे जज़्ब कीजिए: **हर डराने वाले ने, हर बस्ती में, यही जुमला सुना।** और

ग़ौर कीजिए **कौन** कहता है — '**मुत्रफ़्फ़ूहा**', ख़ुश-हाल, ऐश-परस्त लोग। क्योंकि **जिनके पास बदलाव से सब से ज़्यादा खोने को है वही 'जैसे चीज़ें हमेशा से होती आई हैं' से सब से ज़्यादा चिपके होते हैं।**

और नबी का जवाब दिया गया: '**क़ाल अ व लौ जि'तुकुम बि-अह्दा मिम्मा वजद्तुम 'अलैहि आबा-अकुम** — उसने कहा: **चाहे मैं तुम्हारे पास उस से बेहतर हिदायत ले आऊँ जिस पर तुमने अपने बाप-दादा को पाया?** क़ालू इन्ना बिमा उर्सिल्तुम बिही काफ़िरून — उन्होंने कहा: बेशक, **हम उस के मुनकिर हैं** जिसके साथ तुम भेजे गए।'

बेटा, देखिए गुफ़्तगू कैसे ख़त्म होती है। **वो उन्हें कुछ बेहतर दिखाने की पेश-कश करता है; वो देखने तक से इनकार करते हैं।** यही अंधी तक़लीद की निशानी-दार अलामत है: **जाँच के बाद इख़्तिलाफ़ नहीं, बल्कि जाँचने से ही इनकार।**

और बेटा, ईमानदार रहिए — **ये सिर्फ़ बुत-परस्तों के बारे में नहीं।** कोई भी रस्म जिसे हम *'हमारे ख़ानदान में ऐसा ही होता आया है'*, *'ये हमारी सक़ाफ़त है'*, *'मेरे बाप ने ऐसे किया'* से दिफ़ा करते हैं — **बिना कभी ये पूछे कि क्या अल्लाह ने उसे इजाज़त दी** — इस आयत में आता है। हमारी कुछ शादी की रस्में, मौत के आस-पास की कुछ रिवायात, विरासत और निकाह में औरतों के हुक़ूक़ के बारे में कुछ रवैये: **नसब से दिफ़ा, सबूत से नहीं।**

क्या वो उसकी रहमत बाँटते हैं?

फिर, बेटा, क़ुरैश ने एक राज़ खोलता ए'तिराज़ किया: 'व क़ालू लौला नुज़्ज़िल हाज़ल्-क़ुरआनु 'अला रजुलिम्-मिनल्-क़र्यतैनि 'अज़ीम — और उन्होंने कहा: **ये क़ुरआन दो बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा?**' — यानी मक्का या ता'इफ़ का कोई दौलत-मंद सरदार।

बेटा, उन्होंने जो मेयार इस्तेमाल किया ग़ौर कीजिए: "अज़ीम' — **बड़ा।** और 'बड़े' से उनका मतलब **अमीर और ताक़तवर** था। वो ये क़ुबूल न कर सके कि वही एक **यतीम** और सब से दौलत-मंदों में से न होने वाले आदमी के पास गई।

और अल्लाह का जवाब क़ुरआन की सब से ताक़तवर फटकारों में से एक है: '**अ हुम यक़्सिमून रहमत रब्बिक** — **क्या वो तुम्हारे रब की रहमत बाँटते हैं?**'

बेटा, उस सवाल की ताक़त महसूस कीजिए। **तुम्हें किसने मुक़र्रर किया ये तय करने को कि अल्लाह का फ़ज़्ल कौन पाए? क्या तुम्हारे पास उसकी रहमत की चाबियाँ हैं कि तुम लेने वाले को मंज़ूर या रद्द कर सको?**

'नह्नु क़समना बैनहुम म'ईशतहुम फ़िल्-हयातिद्-दुन्या — **हमने** उन के दरमियान दुनिया की ज़िंदगी में उनका **रिज़्क़ बाँटा** — व रफ़'अ्ना ब'अ्ज़हुम फ़ौक़ ब'अ्ज़िन दरजातिल्-लि-यत्तख़िज़ ब'अ्ज़ुहुम ब'अ्ज़न सुख़्रिय्या — और हमने कुछ को दूसरों पर दर्जों में बुलंद किया, **ताकि वो एक दूसरे से ख़िदमत लें।**'

बेटा, यहाँ हिकमत देखिए। **दौलत और सलाहियत का फ़र्क़ इत्तिफ़ाक़ नहीं — ये एक डिज़ाइन-शुदा निज़ाम है जो मुआशरे को चलाता है।** अगर हर कोई दौलत और हुनर में एक जैसा होता, **किसी को किसी की ज़रूरत न होती**; कुछ न बनता; न कोई डॉक्टर और मरीज़ होता, न उस्ताद और शागिर्द, न मालिक और मज़दूर। **फ़र्क़ वो बाहमी एहतियाज पैदा करता है जो इंसानी ज़िंदगी को मुमकिन बनाता है।**

और फिर वो आयत जो **हर दुनयवी फ़र्क़ को उसकी जगह रख देती है**: '**व रहमतु रब्बिक ख़ैरुम्-मिम्मा यज्म'ऊन** — और तुम्हारे रब की **रहमत** उस से **बेहतर** है जो वो **जमा** करते हैं।'

बेटा, **वो जो कुछ उम्र-भर में जमा करें — वो एक लम्हे में उस से बेहतर देता है।**

चाँदी के दरवाज़े और सोने की छतें

और अब, बेटा, वो हिस्सा जो इस सूरह को उसका नाम देता है — और इसमें **इस दुनिया की असली क़ीमत** के बारे में क़ुरआन का सब से चौंका देने वाला बयान है।

'**व लौला अंय्-यकूनन्-नासु उम्मतंव्-वाहिदह** — और **अगर ये (ख़तरा) न होता** कि लोग **एक ही** (काफ़िर) उम्मत बन जाएँ — **ल-ज'अल्ना लि-मंय्-यक्फ़ुरु बिर्-रहमानि लि-बुयूतिहिम सुक़ुफ़म्-मिन फ़िज़्ज़तिंव्-व म'आरिज 'अलैहा

यज़्हरून** — तो **हम अर-रहमान का इनकार करने वालों के** लिए, उनके घरों के, **चाँदी की छतें** और **सीढ़ियाँ** बनाते जिन पर वो चढ़ते — व लि-बुयूतिहिम अब्वाबंव्-व सुरुरन 'अलैहा यत्तकिऊन — और उनके घरों के **दरवाज़े** और **तख़्त** जिन पर वो टिकते — **व ज़ुख़्रुफ़ा** — और **सोने के ज़ेवर।**'

बेटा, समझिए अल्लाह क्या कह रहे हैं। वो कह रहे हैं: **ये दुनिया मेरी नज़र में इतनी बे-क़ीमत है कि मैं हर काफ़िर को एक चाँदी की छत और सोने के ज़ेवर वाला घर दे देता — मैं पूरी चीज़ उन्हें सौंप देता जो मेरा इनकार करते हैं** — सिवाए एक वजह के: **कि लोग दौलत से इतनी आसानी से मुतअस्सिर हो जाते हैं कि अगर सारे मुनकिर अमीर होते, हर कोई ईमान छोड़ देता सिर्फ़ उनमें शामिल होने को।**

बेटा, **यही दुनिया की असली क़ीमत है।** वाहिद चीज़ जिसने अल्लाह को इसे पूरी तरह उन का इनकार करने वालों को देने से रोका **वो ये कि हम इतने कमज़ोर हैं कि एक सोने की छत से आगे नहीं देख सकते।**

और आयत ख़त्म होती है: '**व इन कुल्लु ज़ालिक लम्मा मता'उल्-हयातिद्-दुन्या** — और ये **सब कुछ** तो बस दुनिया की ज़िंदगी का **साज़-ओ-सामान** है — **वल्-आख़िरतु 'इंद रब्बिक लिल्-मुत्तक़ीन** — और **आख़िरत**, तुम्हारे रब के पास, **मुत्तक़ियों** के लिए है।'

बेटा, नबी ﷺ ने फ़रमाया कि **अगर ये दुनिया अल्लाह के नज़दीक एक मच्छर के पर के बराबर भी होती, तो वो किसी काफ़िर को इस में से एक घूँट पानी न देते।** और आपने ﷺ एक बार एक मरी हुई बकरी के पास से गुज़रते हुए जिसके कान बिगड़े हुए थे, सहाबा से पूछा कि कौन इसे एक दिरहम में ख़रीदना चाहेगा — और उन्होंने कहा कि वो इसे किसी क़ीमत पर न चाहेंगे। **आपने फ़रमाया: ये दुनिया अल्लाह के नज़दीक उस से भी ज़्यादा हक़ीर है जितनी ये तुम्हारे नज़दीक है।**

बेटा, इसका मतलब ये नहीं कि दौलत बुरी है या तुम्हें काम नहीं करना चाहिए। इसका मतलब है: **दुनयवी कामयाबी को अल्लाह की मोहब्बत का अपना पैमाना मत बनाओ। एक आदमी की चाँदी की छत तुम्हें उसके रब के हाँ उसके मक़ाम के बारे में

कुछ नहीं बताती।**

और सूरह ग़ाफ़िलों के लिए एक तंबीह बढ़ाती है: '**व मंय्-य'शु 'अन ज़िक्रिर्-रहमानि नुक़य्यिज़ लहू शैतानन फ़-हुव लहू क़रीन** — और जो **अर-रहमान की याद से अंधा** हो जाए, हम उसके लिए एक **शैतान मुक़र्रर** कर देते हैं, और वो उसका **हम-दम** बन जाता है।'

बेटा, एक ना-क़ाबिल-ए-फ़रामोश तस्वीर: **शैतान सिर्फ़ क़रीब नहीं — वो तैनात है**, उस शख़्स से एक साथी की तरह बँधा हुआ। 'व इन्नहुम ल-यसुद्दूनहुम 'अनिस्-सबीलि **व यह्सबून अन्नहुम मुह्तदून** — और बेशक, वो उन्हें रास्ते से **रोकते** हैं जब कि **वो समझते हैं कि वो हिदायत-याफ़्ता हैं।**'

बेटा, **यही सब से ख़तरनाक हालत है: ग़लत रास्ते पर जाना जब कि पूरा यक़ीन हो कि तुम सही हो।**

'हत्ता इज़ा जा-अना क़ाल **या लैत बैनी व बैनक बु'अ्दल्-मश्रिक़ैनि** फ़-बि'सल्-क़रीन — यहाँ तक कि जब वो हमारे पास आता है, कहता है: **काश मेरे और तेरे दरमियान दो मशरिक़ों का फ़ासला होता** — क्या ही बुरा हम-दम!'

उस दिन दोस्त दुश्मन होंगे

और फिर, बेटा, दोस्ती के बारे में एक आयत आती है जिसे **आपकी बाक़ी ज़िंदगी के हर सोहबत के चुनाव को गढ़ना चाहिए:**

'**अल्-अख़िल्ला-उ यौम-इज़िम्-ब'अ्ज़ुहुम लि-ब'अ्ज़िन 'अदुव्वुन इल्लल्-मुत्तक़ीन** — **उस दिन, गहरे दोस्त एक दूसरे के दुश्मन होंगे — सिवाए मुत्तक़ियों के।**'

बेटा, '**अख़िल्ला**' 'ख़लील' की जमा है — **सब से गहरी क़िस्म का दोस्त**, वो जिसकी मोहब्बत तुम्हारे अंदरूनी-तर वुजूद में दाख़िल हो चुकी हो। और अल्लाह कहते हैं कि उस दिन, **ऐसी तमाम दोस्तियाँ दुश्मनी में बदल जाएँगी — एक इस्तिस्ना के साथ: वो जो तक़्वा पर बनी हों।**

सोचिए क्यों। **गुनाह पर बनी हर दोस्ती उस दिन इल्ज़ाम का ज़रिया बन जाती है**: *तुमने मुझे उस से मिलवाया; तुमने मुझे मसरूफ़ रखा; तुम हँसे जब मैं झिझका; तुम्हारी वजह से मैंने नमाज़ छोड़ी।* **हर एक दूसरे पर पलट जाएगा।**

और तक़्वा पर बनी दोस्ती? वो उस दिन भी दोस्ती रहती है — क्योंकि उसमें एक दूसरे को सिर्फ़ भलाई की तरफ़ ले जाया गया।

बेटा, तो आज रात अपनी दोस्तियों को इस आयत पर तौलिए। पूछिए: **ये शख़्स मुझे किस तरफ़ ले जा रहा है? क़ियामत के दिन, क्या मैं इसे देख कर ख़ुश हूँगा — या ये चाहूँगा कि हम कभी मिले ही न होते?**

और फिर मुत्तक़ियों से ख़िताब — बेटा, **ये पूरे क़ुरआन के सब से नरम जुमलों में से है**: '**या 'इबादि ला ख़ौफ़ुन 'अलैकुमुल्-यौम व ला अन्तुम तह्ज़नून** — **ऐ मेरे बंदो! आज न तुम पर कोई ख़ौफ़ है, और न तुम ग़मगीन होगे।**'

बेटा, दो लफ़्ज़ ग़ौर कीजिए: '**ख़ौफ़**' आने वाले का डर है; '**हुज़्न**' गुज़रे हुए का ग़म। **और दोनों एक साथ उठा लिए गए।** इंसानी दिल इन्हीं दो के दरमियान झूलता रहता है — जो हो चुका उस पर अफ़सोस, जो आने वाला है उस का ख़ौफ़। **उस दिन, दोनों ख़त्म।**

और ग़ौर कीजिए वो उन्हें कैसे पुकारते हैं: '**या 'इबादि**' — **ऐ मेरे बंदो।** निस्बत के साथ। बेटा, **इस एक इज़ाफ़त में वो सारा शरफ़ है जो कोई मख़लूक़ चाह सकती है।**

'उद्ख़ुलुल्-जन्नत अन्तुम व अज़्वाजुकुम तुह्बरून — **जन्नत में दाख़िल हो जाओ, तुम और तुम्हारे साथी, ख़ुश किए जाते हुए।** … व फ़ीहा मा तश्तहीहिल्-अन्फ़ुसु व तलज़्ज़ुल्-अ'युन — और उसमें वो है जो **नफ़्स चाहें** और जिस से **आँखें लज़्ज़त** पाएँ — **व अन्तुम फ़ीहा ख़ालिदून** — और तुम उसमें हमेशा रहोगे।'

इस सूरह से क्या सीखा

1. ये किताब समझने के लिए उतरी — 'ल'अल्लकुम त'क़िलून'; ख़ूबसूरत पढ़ना

काफ़ी नहीं।

2. सफ़र की दुआ याद कीजिए, और हर बार कहिए — और ग़ौर कीजिए कि वो 'हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं' पर ख़त्म होती है।

3. 'हमने अपने बाप-दादा को इस पर पाया' हर बस्ती में सुना गया — रस्म की जाँच से इनकार अंधी तक़लीद है, चाहे नाम कुछ भी हो।

4. 'क्या वो तुम्हारे रब की रहमत बाँटते हैं?' — फ़ज़्ल किसे मिले, ये तय करना कभी आपका काम न था।

5. दुनिया की क़ीमत: अल्लाह इसे पूरी अपने मुनकिरों को दे देते, बस इस डर से कि हम एक सोने की छत से आगे नहीं देख सकते।

6. सब से ख़तरनाक हालत ये है कि इंसान भटका हुआ हो और उसे पूरा यक़ीन हो कि वो हिदायत पर है।

7. अपनी दोस्तियाँ आज तौल लीजिए — उस दिन सिर्फ़ तक़्वा वाली दोस्ती दोस्ती रहेगी, बाक़ी सब दुश्मनी बन जाएँगी।

या अल्लाह, हमें उन में शामिल फ़रमाइए जिन से कहा जाएगा 'ऐ मेरे बंदो, आज न ख़ौफ़ है न ग़म' — और हमारी दोस्तियाँ अपने तक़्वा पर बना दीजिए। आमीन।